मंच संचालन स्क्रिप्ट-गणतंत्र दिवस।

है लिए हथियार दुश्मन ताक में बैठा उधर,
और हम तैयार हैं सीना लिए अपना इधर.
ख़ून से खेलेंगे होली गर वतन मुश्क़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

एंकर मेल– आज के इस निज़ता एवम आज़ादी के जश्न में, मैं…………………हमारे इस (स्कूल/कॉलेज/संस्थान का नाम) में पधारे हमारे हर खासो-ओ-आम का बहुत बहुत स्वागत करता हूँ-जय हिंद कहता हूँ।

मैं हमारे सभी विशिष्ट अतिथियों, समाजसेवियों, हमारे गुरुजनों, सभी पधारे हुए आज़ादी के दीवानों और हमारे साथियों को हमारे (स्कूल/कॉलेज/संस्थान का नाम) की तरफ से गणतंत्र दिवस की शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ-बधाइयाँ देता हूँ।

एंकर फीमेल– जी हां साथियों, बधाई इस बात के लिये कि हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं, बधाई इस बात की, कि हम किसी को अपनी निज़ता का हिसाब नहीं दे रहे हैं। बधाई इस बात की इस देश की रज-रज, कण-कण हमें आशीर्वाद दे रहे हैं।

शुभकामनाएं इसलिये कि हमने लगभग 200 साल की परतंत्रता सहन करने के बाद यह अनमोल आज़ादी की फ़िज़ा पाई है।

और यह आज़ादी, यह अपनी पसंद से जीने का अधिकार हमें सदा प्राप्त हो ऐसी शुभकामनाओं के साथ मैं…………………..हमारे (स्कूल/कॉलेज/संस्थान का नाम) की तरफ से आप सब देशभक्तों का इस आज़ादी के जश्न में स्वागत करती हूँ-वंदे मातरम कहती हूँ।

वतन पर मर-मिटने के ज़माने गुज़र गए,

मज़ा तो अब इसके लिए जीने में है।

अपनी आज़ादी अपनी संप्रुभता के लिए एक बार जोरदार तालियों बजा दीजिये। धन्यवाद।

एंकर मेल-जी हाँ साथियो, ये जो हमारे अमर शहीदों ने बलिदानों के बीज इस मातृभूमि पर रोपे थे, आज उनकी टहनियों पर मदमदाते फूल खिल आये हैं। इन फूलों की महक इस देश में ही नहीं सारे संसार में फैले, इस कामना के साथ आइये आज के इस महोत्सव का शुभारंभ करते हैं।

इक चमक ताब इक मदहोशी, हर आलम चंगा होता है

इक हूक हुमकती आँखों में, हर कतरा गंगा होता है

दिल में मतवाली मौज पले, मन सात आसमाँ छूता है

जब जब अपने इन हाथों में, लहराता तिरंगा होता है

तो आइये मित्रो सर्वप्रथम हम अपनी आन-बान-शान के प्रतीक हमारे राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का रोहण करने का शुभ क्रम प्रारंभ करते हैं ।

मैं आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि (पद एवम संस्थान का नाम) श्रीमान …………………जी से और कार्यक्रम अध्यक्ष (पद एवम संस्थान का नाम)……………… जी से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि वो आयें और ध्वजारोहण का पवित्र क्रम संपन्न करें ।

मैं अपने वरिष्ठों से अनुरोध करता हूँ कि वो हमारे डिगनिटीज़ को सहायता प्रदान करें।

ध्वजारोहण के पश्चात राष्ट्रगीत गायन।

हमारा तिरंगा विश्वविजयी हो ऐसी कामना के साथ एक बार जोरदार तालियाँ बजा दीजिये। बहुत-बहुत धन्यवाद।

एंकर फीमेल–

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते

देहि सौभाग्यमारोग्यं, देहि मे परमं सुखम्

रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि

जी हां साथियो, जैसी कि भारतीय संस्कृति की परम्परा है, हम सर्व प्रथम माँ भारती और माँ सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलित करके मंगल कामना के पावन क्रम को आरम्भ करते हैं।

मैं अपने गुरुजन/पदाधिकारियों श्री …………………जी से एवम श्री…………………जी से अनुरोध करती हूँ कि वो हमारी डिगनिटीज़ को मंच तक ले के आयें ताकि इस क्रम का संपादन हो सके ।

दीप प्रज्ज्वलन।।।

एंकर मेल-एक बार जोरदार करतल ध्वनि के साथ इस मंगल परम्परा का अनुमोदन करते हैं और माँ भारती और माँ सरस्वती से प्रार्थना करते हैं कि इस देश पर उनकी ममता बरसती रहे।

उड़ू अम्बर में चिड़ियों सा चहक जाऊँ लहक जाऊँ

खिलूँ गुल सा चमन में और खुशबू सा महक जाऊँ

कुहासे सारे संशय के मेरे मन से हटा देना

मेरी मैया शारदे माँ मुझे अपना बना लेना

इस ओजमयी क्रम के पश्चात मैं अतिथि स्वागत नृत्य की प्रस्तुति के लिये हमारे प्रतिभागियों कुमारी.......एवम कुमारी........ को मंच पर आमंत्रित करता हूँ कि वो यथाशीघ्र आयें और स्वागत नृत्य प्रस्तुत करें।

एंकर मेल-एक बार जोरदार तालियाँ इस उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिये।

मै अतिथि स्वागत के इस क्रम को आंगे बढ़ाते हुये आज के मुख्य अतिथि श्रीमन............ जी की करिश्माई शख्सियत को ये दो पंक्तियाँ समर्पित करना चाहता हूँ कि..

इस बस्ती से अलग ज़माने से ज़ुदा कह दें

अजब कहें अज़ीम कहें अलहदा कह दें

आपकी रहनुमाई के किस्से इतने मकबूल हैं

कि हमारी पेश चले तो हम आपको खुदा कह दें

जोरदार तालियाँ हमारे मुख्य अतिथि के लिए। मैं हमारी (संस्था/स्कूल/कॉलेज) के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/सचिव श्री................से अनुरोध करता हूँ कि वो आयें और माल्यापर्ण करके उनका स्वागत करें-अभिनंदन करें।

एंकर फीमेल-अभिनंदन के इस क्रम को आंगे बढ़ाते हुए मैं आज के कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमन..................जी के करिश्माई व्यक्तित्व को ये पँक्तियाँ समर्पित करना चाहती हूँ कि...

ना गिनकर देता है ना तौलकर देता है

खुदा भी नेकबंदो को दिल खोल कर देता है

मैं हमारी (संस्था/स्कूल/कॉलेज) के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/सचिव श्री……………जी से अनुरोध करती हूँ कि वो आयें और माल्यापर्ण करके हमारे आज के कार्यक्रम अध्यक्ष जी का स्वागत करें-अभिनंदन करें।

एंकर मेल-एकबार जोरदार तालियों की ध्वनि करके हमारे नगर, हमारे प्रदेश का मस्तक गर्व से ऊंचा करने वाली हमारी इन अतिथि हस्तियों का अभिनंदन करेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद।

मैं आज के मुख्य अतिथि श्रीमन……….जी से अनुरोध करता हूँ कि देशभक्ति के इस बासंती त्यौहार पर हमें चंद शब्द कहकर हमारा पथ प्रदर्शित करें।

मुख्य अतिथि संक्षिप्त भाषण ।

एंकर फीमेल-बहुत ही प्रेरणा दायक वक्तव्य । जोरदार तालियाँ ऐसी सकारात्मक सोच भरे उदगार के लिए। बहुत बहुत धन्यवाद माननीय मुख्य अतिथि जी।

तो आइये प्यारे देशवासियों, हम अब छलकाते हैं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का एक ऐसा अमृत घट जिसकी बूंद-बूंद आपकी नसों में देशभक्ति का तेज़ाब बहा देगा।

संगीन पे धर कर माथा सो गये अमर बलिदानी

जो शहीद हुये हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी।

जी हाँ साथियों, यह वो अमर गीत है जिसे सुनकर हमारे दिल में इस देश पर कुर्बान हो जाने का ज़ज़्बा आ जाता है।

अमर शहीदों के शौर्य और बलिदानों की याद से भरा हुआ यह अमर गीत आपके सामने प्रस्तुत करने आ रहीं हैं हमारी संस्था/स्कूल/कॉलेज की प्रतिभागी कुमारी ………… तो आइये साथियों डूब जाते हैं इस अमर गीत में।

एंकर मेल-बेमिसाल । बेमिसाल । बहुत ही सुन्दर ओज से भरी हुई सुमधुर प्रस्तुति । एकबार जोरदार तालियाँ हमारे अमर शहीदों के नाम पर और कुमारी..........की इस शानदार प्रस्तुति के लिए बजा सकते हैं।

साथियों, इक तड़प, इक सिहरन, इक हूक सी दिल में उठती है जब हम उन गुलामी के दिनों के बारे में पढ़ते हैं ।

वो फिरंगियों के नित-नित नए बवाल, वो देश का बुरा होता हाल, वो घर घर में उठती आज़ादी की बेचैनी, वो सरफरोशों की नस-नस में उबाल। आज जितना हम जानते समझते हैं ये दास्तां उससे भी कहीं ज्यादा गहरी और महान है।

मैं चार पंक्तियाँ उन महान शहीदों और आज़ादी के मतवालों के नाम समर्पित करना चाहता हूँ कि

दृढ़ता हो लौह पुरुष जैसी, कुछ भगत सिंह सी मस्ती हो

नेताजी जैसा ओज मिले, आज़ाद के जैसी हस्ती हो

उधम का उधम दिल बिस्मिल, मंगल पांडे का ताव मिले

हे ईश्वर जन्म दुबारा दो तो, भारत माँ की छांव मिले ।

एंकर फीमेल-एक बार जोरदार तालियाँ हमारे उन अमर शहीदों के नाम बजा दीजिये। परतंत्र भारत की स्वछंद फ़िज़ा को पाने के लिये किस प्रकार से हमारे अमर शहीदों ने कुर्बानियाँ दीं हैं।

इसी विषय को लेकर हमारी अगली प्रस्तुति जो कि एक नृत्य नाट्य प्रस्तुति है को लेकर आ रहे हैं हमारे प्रतिभागी……………

और उनके साथी 1….., 2……., 3…….., 4……… तो आइये आज हम बहुत करीब से उस दीवानगी के जज़्बे को जी लेते हैं।

सीने में तड़प, एक हुंकार, एक गुर्राहट पैदा करती बहुत ही शानदार प्रस्तुति । एक बार जोरदार तालियाँ इस प्रस्तुति के कलाकारों के लिये।

अनुरोध है कि आपका साथ और समर्थन हमारे प्रतिभागियों के लिये ऊर्जा स्रोत जैसा है। अच्छी-अच्छी और प्रभावी प्रस्तुतियों के लिये आपका प्रोत्साहन नितांत आवश्यक है।

हमारे प्रतिभागी कोई पेशेवर कलाकार नहीं है। कई दिनों के अथक परिश्रम के बाद ये यहाँ प्रस्तुति दे रहे हैं। यकीन मानिये, आपकी एक ताली की गड़गड़ाहट इनके लिए नोबल पुरस्कार जैसी है।

मर मिटे जो देश पर उन शहीदों की जवानी लिख दो

स्वांस स्वांस में सरफ़रोशी की कहानी लिख दो

हमारा वादा है आज़ादी के जश्न को खूबसुरत बनाने का

बस आप हर प्रस्तुति पर तालियों की रवानी लिख दो

एक बार जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट हो जाये इस आज़ादी के जश्न के नाम पर और हमारे प्रतिभागियों की बेमिसाल प्रस्तुतियों के नाम पर।

एंकर मेल– बहुत खूबसूरत साथियो। देश के लिए धड़कते, हर दिल को नमन करते हुये मैं कार्यक्रम को अगले पड़ाव पर लेकर चलता हूँ । एक ऐसी प्रस्तुति की ओर, जिसके बारे में मेरा दावा है आपने अब तक ऐसी प्रस्तुति सिर्फ फिल्मों या टेलीविजन पर ही देखी होगी।

अब आपके सामने आ रही है देशभक्ति से भरा हुआ एक ऐसा एक्ट जिसके देखकर आपकी भुजाएं फड़क जाएँगी लहू मे उबाल आ जायेगा।

तो मैं आमंत्रित करता हूँ अगले प्रतिभागी…………….को और उनके साथी प्रतिभागियों

1……, 2……., 3…….., 4……….., 5………

को कि वो आयें और अपनी प्रस्तुति पेश करें ।

जोरदार जोरदार तालियाँ इस बेमिसाल गर्जना करती हुई प्रस्तुति के लिए एवम प्रतिभगियों के लिये। सचमुच क्या लोग थे, क्या दीवानगी थी, क्या शौर्य था, क्या ज़ज़्बा था कि..

हम तो घर से ही थे निकले बाँधकर सर पर कफ़न

जाँ हथेली पर लिए लो बढ चले हैं ये कदम

ज़िंदगी तो अपनी मॆहमाँ मौत की महफ़िल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

एंकर फीमेल-बहुत ही खूबसूरत प्रस्तुति थी। मैं इस उत्सव के आरंभ में कही हुईं अपनी पंक्तियाँ पुनः दोहराना चाहती हूँ कि..

वतन पर मर-मिटने के ज़माने गुज़र गए,

मज़ा तो अब इसके लिए जीने में है।

वाह कितनी बढ़िया बात लिखी है किसी ने । अब रुत कुर्बानी देने की नहीं इस देश को संवारने की है, इसको ज़न्नत बनाने की है, इसको स्वच्छ और सुन्दर बनाने की है। अपने चमन को अपने वतन को संवारना इसे मेहबूब बनाना भी आज के समय की सबसे बड़ी देशभक्ति है।

तो आइये ले चलते हैं आपको अपनी अगली, बहुत ही प्रेरक नुक्कड़ प्रस्तुति स्वच्छता अभियान की ओर जिसे लेकर आ रहे हैं हमारे प्रतिभागी

1……, 2………., 3………., 4………, 5………., 6………….

बहुत ही जानदार और प्रभावी प्रस्तुति । कम से कम 1 मिनिट की तालियों की प्रोत्साहन राशि मिलना चाहिए इन कलाकारों को । जोरदार तालियाँ।

कितना अद्भुत सन्देश दे गयी ये प्रस्तुति…..

हमने देखे कई करीबी घोषित दिल के सच्चों को

ज्ञानी ध्यानी महज़ कागज़ी देखा अच्छे अच्छों को

बड़ी बड़ी बातें तो कर लीं छोटी बात भुला दी है

किस प्रकार की अलमस्ती है ये कैसी आज़ादी है

कैसे इनको समझायें हम क्या रह गया बताने को

चलो साथियो निकलें अब भारत को स्वच्छ बनाने को

एंकर मेल– सचमुच हमारे प्रतिभागियों ने कमाल ही कर दिया। आइये अब आप सबको ले चलते हैं सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल पेश करती एक अद्भुत नृत्य प्रस्तुति की ओर जिसके प्रतिभागी हैं

1……, 2………., 3………., 4………

मैं इन पंक्तियों के माध्यम से हमारी देश की सौहार्दपूर्ण विरासत की याद दिलाते हुये इस प्रस्तुति की ओर आपको ले चलूंगा कि..

मंदिर में दाना चुगकर, मस्जिद में पानी पीती है
मैने सुना राधा की चुनरी, कोई सलमा बेगम सीती है
एक रफ़ी थे महफिल महफिल, रघुपति राघव गाते थे
एक हमारे प्रेमचंद जी, ईदगाह सुनाते थे
कान्हा की महिमा गाते, रसखान दिखाई देते हैं
दिखते होंगे हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई गैरों को
मुझको तो हर इंसा में भगवान दिखाई देते हैं

आइये ले चलते हैं आपको इस अनुपम प्रस्तुति की ओर।

अद्भुत अद्भुत अद्भुत । बहुत ही कमाल की प्रस्तुति ।
आपकी तालियाँ भी कमाल की होनी चाहिए ।

एंकर फीमेल– अंकुर जी (एंकर मेल) आपकी पेश की हुई इस प्रस्तुति ने तो कमाल कर दिया। अब मेरा भी मन कर रहा कि एक इससे भी शानदार देश भक्ति की बयार लिए एक सुमधुर कव्वाली आप सबको सुनवा दी जाये ।

एंकर मेल-वाह संपदा जी (एंकर फीमेल) कव्वाली की तो बात ही अलग होती है तो शीघ्र सुनवाइये।

एंकर फीमेल– तो लीजिये साथियो एक मधुरतम कव्वाली की प्रस्तुति 'है अगर दुश्मन-दुश्मन ज़माना गम नहीं-गम नहीं' जिसे लेकर आ रहें हैं हमारे प्रतिभागी 1……, 2………., 3………., 4………, 5……….

एकदम सुरीली एवम जोशीली प्रस्तुती। एक बार जोरदार तालियां हमारे प्रतिभागियों के लिए।

एंकर मेल-

यह तन तेरा दिल मन तेरा, ऐ वतन कहो तो मैं मर जाऊं

जब रुत आये मर मिटने की, तो कफ़न तिरंगा कर जाऊं

ऐसी ही वतनपरस्ती की तमन्ना लिये मैं अपने सभी देशबासियों को गणतंत्र दिवस की पुनः बहुत बहुत बधाइयाँ देता हूँ। जय हिंद।

एंकर फीमेल– बहुत बहुत धन्यवाद अंकुर और बहुत बहुत धन्यवाद सभी वतन परस्तों का। मैं हमारी संस्था/स्कूल/कॉलेज के अध्यक्ष/प्राचार्य महोदय से निवेदन करती हूँ कि वो मंच पर अपने चंद उदगार व्यक्त कर इस उत्सव के समापन की घोषणा करें। बहुत बहुत धन्यवाद। जय हिंद।